

**असूर्य** (von असुर) gaṇa गवादि zu P. 5, 1, 2. 1) adj. f. श्री. a) *unkörperlich, geistig, göttlich*: मूला देवानामसूर्यो पुरोहितः RV. 8, 90, 12. असूर्यो वर्षो नि रिणीते अस्य तम् 9, 71, 2. चत्वारि ते असूर्याणि नाम (सति) 10, 54, 4. Brhaspati 2, 23, 2. Indra 4, 16, 2. 7, 22, 5. 10, 103, 11. — b) *geisterhaft, dämonisch, asurisch*: यो ह्यस्यमा वाचं वदत्यसूर्या वै सा वागदेवतुष्टा Ait. Br. 2, 6. Cat. Br. 3, 2, 1, 25. 3, 3, 17. 6, 8, 4, 10. कर्म 6, 8, 4, 2. लोकाः 14, 7, 3, 14. ved. = असुरस्य स्वम् P. 4, 4, 123. असूर्यं वा एतत्पात्रम् Sch. — 2) n. a) *Geistigkeit, göttliche Lebensfülle, Göttlichkeit*, auch pl.: दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रासूर्यं देवेभिर्धापि विश्वम् RV. 6, 20, 2. अहं राजा वरुणो मह्यं तान्यसूर्याणि प्रथमा धारयत् 4, 42, 2. बृहदा गायिषे ववो असूर्या नदीनाम् 7, 96, 1. 65, 1. अयो नपादसूर्यस्य मूला विश्वान्ययो भुवना ज्ञान 2, 33, 2. 4, 167, 5. 168, 7. 2, 33, 9. 3, 38, 7. 7, 5, 6. 21, 7. 63, 1. 66, 2. 6, 30, 2. 36, 1. 74, 1. 8, 25, 3. 10, 50, 3. — b) *das Unkörperliche, die Kräfte oder die Gesamtheit der Geisterwesen*: तं विश्वस्मादुर्वनात्पासि धर्मणासूर्यात्पासि धर्मणा RV. 1, 134, 5. (आदित्याः) दीर्घाधिष्ठो रत्नमाणा असूर्यमृतावीनश्चर्यमाना ऋणानि 2, 27, 4. In beiden Fällen wäre übrigens auch die vorang. Bedeutung nicht unmöglich.

**असुषि** (3. अ + सु) adj. *keinen Soma bereitend, unfromm*: नासुषिरा-  
पिर्न सखा RV. 4, 23, 6. 24, 5. त्र्यसुषीन्द्र वृक्षपणतः 6, 44, 11.

**असुहृद्** (3. अ + सु) m. *Nicht-Freund* (ohne deshalb ein Feind zu sein) N. 26, 14. Feind H. 729, Sch. R. 5, 76, 5. Häufig am Ende eines comp. H. 200.

**असू** (3. अ + सू) adj. *nicht gebärend, unfruchtbar*: धेनुमस्वम् RV. 1, 112, 3. 10, 61, 17. असूम् VS. 30, 14. अस्वर्ं वाप्रजसं कृणोमि AV. 7, 33, 3.

**असूतण** n. *Geringachtung* AK. 1, 1, 7, 23. H. 1479, Sch. Ausser dieser Form werden noch aufgeführt: असूतण, असूतण, असूतण, अस्ततण. Da die Etym. nicht klar ist, lässt sich auch keine Grundform aufstellen.

**असूत** (3. अ + सूत) adj. *die nicht geboren hat, unfruchtbar*: असूतज-  
रतो P. 6, 2, 42.

**असूतिक** (von 3. अ + सूति) adj. *dass.* AV. 6, 83, 3.

**असूय** (von असु), असूयति und ०ते (उपतापे) gaṇa काण्डादि zu P. 3, 1, 27. *murren, ungehalten oder unzufrieden sein*: असूयन्त्रयचाकशं तस्मा असूयत् पुनः RV. 10, 135, 2. अस्तेव नो ऽप्यस्यो भाग इति ते कासुरा असूयत इवेचुः Cat. Br. 1, 2, 5, 4. स्वामी विश्वसिन्ते ऽप्यसूयति Citat in Śāh. D. 43, 7. प्रणु सर्वं मे न चासूयितुमर्हसि MBh. 1, 140. निदेशे हि मया तुभ्यं स्वातव्यमनसूयता 3, 12675. ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठति मानवाः । अद्वावतो ऽनसूयतो मुच्यन्ते ते ऽपि कर्मभिः ॥ Bhāg. 3, 31. श्रोतव्यमनसूयता R. 1, 3, 4. mit dem dat. der Person P. 1, 4, 37. Vop. 3, 15. सा कास्मा आ-  
रकादिवैवाय असूयतस्माड स्त्री पुंसोपमन्नितारकादिवैवाये ऽसूयति स हो-  
वाचारकादिव वै म आसूयीदिति Cat. Br. 3, 2, 4, 19. नित्यं तेभ्यो ऽसूये MBh. 1, 5545. mit dem acc.: असूयति हि राजानो ज्ञानानन्तवादिनः MBh. 4, 99. कन्यामरुमिमाम् — यदि माम् — रामो नासूयेन्मातृघातकम् R. 2, 78, 22. कश्च प्रब्रज्यमानो वा नासूयेत्पितरं सुतः Dāc. 2, 62. ये तु धर्मानसूयन्ते MBh. 3, 13768. — *caus.* Jemand zum Murren, zum Ungehaltenensein bringen: क्रोधादसूययित्वा तं रत्ता मे भवतः कृता N. 14, 17.

— *अनि seinen Unwillen gegen Jmd oder Etwas (acc.) an den Tag legen, schmähen*: मा यो ऽभ्यसूयति Bhāg. 18, 67. वृहं मामभ्यसूयति पुत्रा मन्युरार्यणाः MBh. 1, 142. प्रहसति स्म तां केचिदभ्यसूयति चापरे 3, 2516.

निद्रा चैवाभ्यसूयामि यस्या हेतोः पिता मम । माता च संशयं प्राप्ता Siv. 3, 90. अज्ञानतस्ते — नाभ्यसूयाम्यहं वचः MBh. 3, 15053. न ते वचः — अभ्यसू-  
ये 1359. नाभ्यसूयां (sic) पतिमहम् 1, 4377. ger.: अभ्यसूयिनाम् (sic) R. 2, 8, 1. auch ohne obj.: ये वेतदभ्यसूयतो नानुतिष्ठति मे मतम् Bhāg. 3, 32. प्रप-  
त्ताच्च गुत्र वृद्धा प्रुश्रूये ऽहम् — सत्यं वेदे नाभ्यसूये यथाशक्ति ददामि च MBh. 3, 13722. — Vgl. अभ्यसूयक und अभ्यसूया.

**असूयक** (von असूय) adj. P. 3, 2, 146. *murrend, ungehalten*: हताः सुच. 1, 103, 2. *missgünstig* Nir. 2, 4. विद्या ब्रह्माणमेत्याह सेवधिस्ते ऽस्मि रत्न  
माम् । असूयकाय मा मा दाः M. 2, 114. सूक्तिं कर्णमुधा व्यनक्तु मुनयः — ब्रूतां  
वाचमसूयको विषमुचम् Čānti. 3, 7. *अनसूयक* (vgl. auch u. d. W.) N. 12, 33. MBh. 3, 13407. Jāc. 1, 28. f. *अनसूयिका* MBh. 3, 10344.

**असूया** (wie eben) f. *Unwille, Ungehaltenensein*: असूयाप्रतिवचने P. 3, 4, 28. असूयापगमे AK. 3, 5, 13. वक्ष्यामि तां हितं किंचित्तु तु सम्यगसूयया  
R. 4, 14, 20. अत्रेना वधूसूयाकुटिलं दर्श Ragh. 6, 82. सासूयम् adv. Māñā. 19, 5. Vīkr. 30, 14. *Unwille über die Verdienste oder das Wohlergehen An-  
derer, Missgunst, Neid*, = दोषारोपो गुणेष्वपि AK. 1, 1, 7, 24. = *अन्यगु-  
णाद्वेषण* H. 323. = *परगुणासहन* P. 8, 1, 8, Sch. = *परगुणेषु दोषाविव्क्-  
रणम्* Kull. zu M. 7, 48. P. 1, 4, 37, Sch. = *अन्यगुणाद्वेनिमोदित्यादसहि-  
क्षता* Śih. D. 72, 13. पेणुन्यं साहसे होह ईर्ष्यासूयार्थद्वेषणम् । वाग्दण्डं च  
पारुष्यं क्रोधातो ऽपि गुणो ऽष्टकः ॥ M. 7, 48. Čāc. 76, 2. Ragh. 4, 23. Prabh. 17, 12. 89, 16. *Widerwille* Nir. 2, 3. — Vgl. अनसूय und अनसूया.

**असूयितर्** (wie eben) nom. ag. *murrend, ungehalten* MBh. 2, 2545. *अनसू* 1, 5611.

**असूयु** (wie eben) adj. *dass.*; s. अनसूय.

**असूर** (von 3. अ + सूर) n. *Abwesenheit eines Soma-Bereiters*: असूरे  
सति सूरयः RV. 8, 10, 4.

**असूतण** n. = असूतण AK. 1, 1, 7, 23, v. l.

**असूत** (3. अ + सूत) adj. *entlegen, fern* Nir. 6, 15. असूते सूते रजसि नि-  
षते RV. 10, 82, 4. असूतं रजो ऽप्यगुस्ते यत्त्वधमं तमः AV. 10, 3, 9.

**असूर्य** (3. अ + सूर्य) adj. *sonnenlos*: असूर्यं तमसि वावधानम् RV. 5, 32, 6.

**असूर्यपण्या** (3. अ + सूर्यम् [acc. von सूर्य] -पण्या) f. *die Gemahlin eines  
Königs* (die im Harem eingesperrt nie die Sonne schaut) P. 3, 2, 36. adj.  
Vop. 26, 55.

**असूतु** (3. अ + सूत) adj. = असू AV. 10, 10, 23: सर्वे गर्भाद्वेपत् ज्ञाप-  
मानादसूतः.

**असूकर** (असून् + कर) m. *Lympe* (Blut erzeugend) H. 620.

**असूक्य** (असून् + प) m. *ein Rakshas* (Blut trinkend) H. 188.

**असूक्यात** (असून् + पात) m. *Blutfall*, pl. *die auf den Boden fallenden  
Blutstropfen* (eines verwundeten Thiers z. B.): यथा नयत्यसूक्यातिर्मृगस्य  
मृगयुः पद्म् M. 8, 44.

**असूक्यावन्** (असून् + पा०) adj. *blutsaugend*: असूक्यावन् AV. 2, 25, 3.

**असूदर** (असून् + दर) m. *Bluterguss, Blutung* Suç. 1, 313, 12. 13. 2, 208, 5.

**असूधरा** (असून् + धरा) f. *Haut* (Blut führend) AK. 2, 6, 3, 13. H. 630.

**असूधारा** (असून् + धारा) f. 1) *ein Strom* Blutes, *Blut in Strömen*  
Kathās. 22, 224. — 2) = असूधरा Bhārata und andere Erkl. zu AK. 2, 6, 3, 13. ČKDn.

**असूख** (असून् + मुख) adj. *mit blutigem Gesicht* AV. 11, 9, 17.